

अग्नि परीक्षा में श्री मैथिलि

श्रीरामचन्द्र रस्ते में, श्रीसिय सनेहु परिखियो ।

बर में भँभटु बाहि जो, ब़ारे बलीअ रखियो ॥

मतलबु दिसी मिठल जो,

मैथिलि मुखु मुरिकियो ।

हरि गुर सन्तन खे निमी,

पति पद खे निरखियो ॥

लिख्यो अण लिख्यो,

माफी द्रिजि मालिक मिठा ॥

पैठी पार्थिवि बाहि में, विदेह जी बारी ।

टिलंदी टिड़न्दी फूल जियाँ, श्रीसीआ सुकुमारी ॥

द्रातर द्राड़िहूअ गुल जियाँ, चमकी चौधारी ।

अजरु आरियलि थिया, मस्तक फूल सारी ॥

रग—रग साहिबि शील साँ, आहे भरियल भारी ।

माता सभ सन्सार जी, पुटिड़ा जियें पारी ॥

राघव रस साँ वरिती, हुब माँ हियारी ।

हिकड़ो पतिव्रतु पाड़ियो, वर वरणी प्यारी ॥

सचिड़ो तनु मनु वचनु थियेई, सुणु साहिबि सचारी ।

कीरति तुंहिजी काइमु सदाँ, जियें देव नदीअ वारी ॥

आहे पिता प्रभू प्यारी, राणी राजल राम जी ॥